आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 08.08.2016) ■ अंक-610 ■ तारीख- 09 अगस्त 2016, श्रावण शुक्ल पक्ष -6 ■ मंगलवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य -1 रूपया (पृष्ठ-1)

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

श्री सत्य सांई एजुकेअर : हृदय ताला व मन चाबी

ân; rkyk gS vkj eu pkch gS

संसार की ओर मन को मोड़ना ही ताला बन्द करना है। ईश्वर की ओर मन को मोड़ना ही ताला खोलना है। जब तुम मन को संसार की ओर मोड़ लेते हो तो तुम स्वयं को बंधन में डाल देते हो। जब तुम मन को ईश्वर की ओर मोड़ लेते हो तो मुक्त हो जाते हो।

&Jh lR; lkbZ ckck

नीति के दोहे

भयउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन।
देखत गरब रहत उर नाहिन।
देखहु कस न जाइ सब सोभा।
जो अवलोकि मोर मनु छोभा।।

भावार्थ-आज कौसल्या को विधाता बहुत ही दाहिने (अनुकूल) हुए हैं, यह देखकर उनके हृदय में गर्व समाता नहीं। तुम स्वयं जाकर सब शोभा क्यों नहीं देख लेतीं, जिसे देखकर मेरे मन में क्षोभ हुआ है।

पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारें।
जानति हहु बस नाहु हमारें।
नीद बहुत प्रिय सेज तुराई।
लखहु न भूप कपट चतुराई।।

भावार्थ- तुम्हारा पुत्र परदेस में है, तुम्हें कुछ सोच नहीं। जानती हो कि स्वामी हमारे वश में हैं। तुम्हें तो तोशक–पलँग पर पडे–पडे नींद लेना ही बहुत प्यारा लगता है, राजा की कपटभरी चतुराई तुम नहीं देखतीं।

श्रद्धा गीत

सत्य वही चिड़ि या कहा, गाए श्रद्धा गीत।
डाल-डाल पर फुदकती, पात-पात से प्रीत।।

भावार्थ -सत्यरूपी चहकती चिड़िया जो हमेशा श्रद्धा के ही गीत गाती है। जो हर डाल पर फुदकती हुई, पात–पात से प्यार की डोर बाँधती हुई फुर्र–फुर्र उड़ती हुई नज़र आती है।

अमृत वचन - सत्यरूपी चिड़िया हमेशा श्रद्धा के ही गीत गाती है।

उसे इंसान कहते हैं

किसी के काम जो आये, उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए, उसे इंसान कहते हैं।।
कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है कभी दु:ख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इंसान कहते हैं।।
यह दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रो कर।
जो गिर कर भी संभल जाए, उसे इन्सान कहते हैं।।
अगर ग़ लती रुलाती है तो, यह राह भी दिखाती है।
व्यक्ति ग़ लती का पुतला है, यह अक़ सर हो ही जाती है।
जो ग़ लती करके पछताए, उसे इन्सान कहते हैं।।
अकेले ही खा-खाकर, सदा गुजरान करते हैं।
यों भरने को तो दुनिया में, पशु भी पेट भरते हैं।
पथिक जो बाँट कर खाये, उसे इन्सान कहते हैं।।

हम वो हैं जो हमें हमारी सोच ने बनाया है, इसलिए इस बात का ध्यान रखिए कि आप क्या सोचते है। शब्द गौण है। विचार रहते है, वे दूर तक यात्रा करते है।
- स्वामी विवेकानंद जी

निन्दा करना पाप, उसे सुनना महापाप: आचार्य विमद सागरजी

उदयपुर, आदिनाथ भवन सेक्टर 11 में आचार्यश्री विमदसागरजी महाराज ने गत दिनों भक्तामर शिविर के नौवें काव्य की विवेचना करते हुए कहा कि यह काव्य भय को दूर करने वाला माना गया है। इस काव्य की महत्ता बताते हुए आचार्यश्री ने कहा कि अगर आपको भय या डर महसूस हो तो इस काव्य का नौ बार पाठ करने से मन को शांति मिलेगी।

आचार्यश्री ने कहा कि निन्दा करना तो पाप है ही निन्दा सुनना महा पाप है। जैसे पक्षियों में कौवे को पशुओं में गधे को उसी तरह मनुष्यों में निन्दा करने वालों को चाण्डाल माना गया है। निन्दा चाहे किसी की भी हो अपने परायों की हो, गुरूओं की हो, मुनियों की हो जो ऐसा करते हैं या इस प्रकार का भाव भी रखते हैं वो निश्चित रूप से नर्क गति को प्राप्त होते हैं। जिसे भगवान बनना है उसे पहले निर्मल भक्त बनना पडेगा।

नाहरगढ़ का किला

जयपुर का नाम लेते ही जेहन में अठारहवीं उन्नीसवीं सदी की कला, संस्कृति और शिल्प नाच उठते हैं। महल, बाजार, प्राचीरें, भवन सब के सब गुलाबी। परकोटा तो अपने आप में विशाल म्यूजियम ही है। और पग–पग पर बिखरी ऐतिहासिक खूबसूरती को चार चाँद लगाता है नाहरगढ।

जयपुर शहर के उत्तर–पश्चिम में फैली मध्यम ऊँचाई की पहाड़ी पर ललाट उठाए सिंह की तरह खड़ा पीतवर्णी दुर्ग नाहरगढ़ जयपुर शहर के हर कोने से दिखाई देता है। शहर के एसएमएस स्टेडियम में जब कोई अंतर्राष्ट्रीय मैच होता है तो वहाँ के कैमरे नाहरगढ़ को फोकस करते हैं और प्राय: कमेंटेटर कहते हैं–'यह जयपुर है, राजसी ठाठ–बाठ की अनोखी और खूबसूरत नगरी।' नाहरगढ़ जयपुर का प्रहरी भी रहा है और पहचान भी। नाहरगढ़ का निर्माण जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने 1734 में कराया था। एक मजबूत और लम्बी प्राचीर के साथ इसे जयगढ़ के साथ जोड़ा गया। साथ ही नाहरगढ़ तक पहुँचने के लिए मार्ग भी विकसित किया गया।

इतिहास में समय–समय पर नाहरगढ़ ने महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई हैं। चाहे फिर वो अपनों की सुरक्षा का जिम्मा हो या गैरों की रक्षा की चिंता। देशभर में 1857 की क्रांति की लहर थी। लोगों का खून उबल रहा था। जगह–जगह गोरों और उनके परिवार पर हमले हो रहे थे। तत्कालीन महाराजा सवाई रामसिंह को अपनी रियासत में रह रहे यूरोपीय लोगों, ब्रिटिश रेजीडेंट्स और उनके परिवारों की सुरक्षा का ख्याल था। उन्होंने इलाके के सभी गोरों और उनके परिवारवालों को सकुशल नाहरगढ़ भिजवा दिया और अपने अतिथि धर्म का पालन किया।

संपूर्ण रूप से देखा जाए तो नाहरगढ़ का निर्माण एक साथ न होकर कई चरणों में हुआ। महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने इसकी नींव रखी, प्राचीर व रास्ता बनवाया, इसके बाद सवाई रामसिंह ने यहाँ 1868 में कई निर्माण कार्य कराए। बाद में सवाई माधोसिंह ने 1883 से 1892 के बीच यहाँ लगभग साढ़े तीन लाख रूपय खर्च कर महत्वपूर्ण निर्माण कराए और नाहरगढ़ को वर्तमान रूप दिया।

नकारात्मकता से दूर रहें

यदि ऑफिस में कोई कामचोर हो तो दूसरों को उसकी देखा देखी उसके प्रभाव में नहीं आना चाहिए। संस्थान में काम करने वाले हर व्यक्ति को अपनी अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। इस बात के मायने नहीं होते कि बाहर क्या हो रहा है या बाहरी स्थितियों का कार्यक्षमता पर कोई नकारात्मक असर नहीं होना चाहिए। संस्थान में हर व्यक्ति को अपनी कार्य संस्कृति को इस तरह निर्धारित करना चाहिए कि उसकी कार्यक्षमता पर किसी निकम्मे या कामचोर व्यक्ति का असर नहीं होना चाहिए। उसके आगे बढ़ने के जज्बे और काम के जोश में कोई बुरा असर नहीं पड़ना चाहिए।

एक ईमानदार कार्यकर्मी के रूप में खुद को डवलप करने के लिए सारी चीजें इस बात पर निर्भर करती हैं कि आप चीजों को किस तरह के आइने में देखते हैं। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि मानवीय प्रवृति में एक खास बात होती है कि वह नकारात्मकता से तुरंत प्रभावित होती है। नेगेटिव कमेंट्स, बयान और क्रियाकलाप और गतिविधियाँ किसी के भी दिमाग पर जल्दी असर डालती हैं। नकारात्मकता में गजब की ऊर्जा होती है। रचनात्मकता और कार्य के प्रति समर्पण को वह जल्दी प्रभावित कर सकती है। लेकिन इस चीज का आपको चयन करना है कि क्या आप अपने आसपास बैठे ऐसे कामचोर सहकर्मी का अनुसरण करना चाहेंगे या उसकी बातों में न आकर अपना रास्ता और अपनी कार्य संस्कृति पर इसका बुरा असर नहीं पड़ने देंगे।

किसी संस्थान में काम करने का सही मतलब समझते हुए अपने काम को ईमानदारी से करेंगे। यह जानते हुए कि यह संस्थान आपको प्रतिमाह आपके कार्य के बदले में एक रकम देता है। इसलिए यदि आप अपने कार्य के प्रति कोताही बरततें हैं तो कार्य की बात बाद में है पहले आप अपने आप के साथ ही बेईमानी करते हैं। इसलिए अपने आपके प्रति ईमानदार रहना आपकी पहली जिम्मेदारी है और यह आपका पहला कर्तव्य है कि प्रोफेशनल लाइफ में आप अपने आपको ऐसा न बना ले कि कोई भी आप पर हावी होकर आपको अपने लक्ष्य से भटकने के लिए बहका ले। इस तरह की नकारात्मक छवि वाले लोग हमारे इर्द–गिर्द हर संस्थान में मौजूद होते हैं। हमें उनके प्रभाव से खुद को बचाकर रखना चाहिए। यदि ऐसा हो कि स्थिति ऐसी बन जाए कि आपके लिए अपने को उसके प्रभाव में आने से रोक पाना संभव ही न हो तो इसके लिए जरूरी है कि अपनी टीम को बदल लेना चाहिए या मैनेजमेंट से कहकर खुद को दूसरे विभाग में ट्रांसफर करवा लेना चाहिए हैं।

मानव मन के बोल

गतांक से आगे...

❖ मन की तरंग ❖

पाणिनी की व्याकरण

एक नाव में दोनों बिराजे और बीच मझधार में जाकर पाणिनी के महान् मित्र ने अपनी व्याकरण को जल समाधि देना प्रारम्भ कर दिया, उस व्याकरण की पुस्तक को जल समाधि दे दी। पाणिनी ने कहा– मित्र, ये क्या किया ? पाणिनी के त्यागी मित्र ने, मानवधर्मी मित्र ने, मानव धर्म को समझने वालों ने कहा– मित्र, मेरे मित्र की आँखों के आँसू नहीं देख सकता, आज से पाणिनी तुम्हारी व्याकरण ही सर्वश्रेष्ठ साबित होगी, मेरी व्याकरण को मैंने जल समाधि दे दी है। ऐसा मेरा त्याग का, तपस्या का, हड्डियों का दान करने वाले दधीचि ऋषि का भारत। हम कहीं खो गये, हम कहीं भूल गये, हम कहीं बहक गये हैं। हमारे भारत में कई क्षेत्रों में जब कोई किसी का वध कर देते हैं, बन्दूक की गोलियों से मार डाला, तलवार से काट डाला, कहीं मनुज जी के पुत्र का अपहरण कर लिया, कहीं कुलदागी ने कन्या भ्रूण हत्या करने का पाप कर लिया। बात–बात पर रोड़े अटकाते हैं, घर–घर में फूट डलवा देते हैं, किसी की बेटी का विवाह होने लगता है, तो दुष्ट लोग आकर उस विवाह को भंग करवाने का पाप कर लेते हैं। कहीं पति शराबी है, कबाबी है और उसके माता–पिता जिस बहू को घर ला रहे हैं, उसके परिवार से छिपा लेते हैं कि मेरा पुत्र शराब पीता है। कहते हैं हमारा पुत्र तो बहुत अच्छा है और जब पत्नी विवाह करके आती है और मालूम पड़ता है कि उनका पति शराबी है, व्यभिचारी है, चरित्रहीन है तो उसकी पत्नी कितना रोती है? मानवता कलंकित हो जाती है, छिपाकर पाप करते हो। यदि आपका पुत्र दुर्व्यसनी है तो उसकी शराब छुड़वा दीजिए, फिर किसी की बेटी को घर में लाईये। क्या अधिकार है आपको? आप कहेंगे कि मानव जी, हम इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं, हम तो आपके दानदाता हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूँ, आप कुछ और कदम आगे बढ़ाईये। बीस लोगों को रोज प्रेरणा दीजिए, प्रेरणा दीजिए कि सद्मार्ग में आवें। जैसे–जैसे सद्मार्ग बढ़ेगा, जैसे सद्कार्य बढ़ेंगे, जैसे सद्भाव बढ़ेंगे, वैसे ही ये अधर्म दूर हो जायेगा।

❖ परिवार और संस्कार ❖

धन का सदुपयोग...

अधर्म की ज्यादा शक्ति नहीं होती बाबू, शक्ति तो धर्म की होती है। धर्म ही हमेशा जीतता है, 'सत्यमेव जयते' होता है, कहीं–कहीं हमारे कुछ कर्तव्य भूल गये हैं, आप कहोगे हम तो सर्विस करते हैं। आपकी नींद आधा घण्टा कम कर दीजिये ना–बाबूजी। आप यदि गप्पें लगाते हो तो उसको बन्द कर दीजिये ना–बाबूजी। आप कहीं हॉल में, मन्दिर में, सभागार में कहीं ना कहीं सत्संग करना प्रारम्भ कर दीजिए, ये मानव धर्म की कथा कहिये। कहिये मैं मानव धर्म की बात करने आया हूँ। आपका रुपया आपको मुबारक हो, आपके सद्गुणों का उजाला फैला दीजिए। शबरी के पास तो रुपया नहीं था, लेकिन शबरी अमर हो गई बाबू। कहाँ भूल गये, किस मायावी ने हमें ठग लिया है? अभी परसों एक सज्जन आये थे कहते हैं, मेरे बेटे के विवाह में 500 किलो चाँदी मिली, 12.50 किलो सोना मिला। क्या करोगे इतनी चाँदी का? यदि सदुपयोग नहीं किया तो चाँदी से माथा फूट जायेगा। इस सोने ने बहुत रूलाया है। जहाँ–जहाँ बहुत धन–सम्पत्ति हुई, कहीं न कहीं भाईयों का प्रेम टूटा है, ये नहीं टूटना चाहिए, धन की कृपा, सुलक्ष्मी की कृपा से प्रेम को बढ़ाना चाहिए। आप अपना हिस्सा न लेकर एक हिस्से का ट्रस्ट बना लीजिए ना। आपके माता–पिता का हिस्सा भी जरूर रखियेगा, इतने स्वार्थी भी मत बन जाना कि पाँच दिन माताजी एक बेटे का भोजन करे, पाँच दिन दूसरे बेटे का भोजन करे, महीने में 30 दिन बेटों के यहाँ भोजन करे और जब इकत्तीसवाँ दिन आ जावे, तो कोई बेटा नहीं बुलावे और उस माँ को भूखा रहना पड़े।

क्रमश: अगले अंक में...

सम्पादकीय

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसा एक अवसर आता है, जब उसकी सफलता का अवसर होता है, तथा इस सफलता के लिए सुरक्षित शक्ति की आवश्यकता होती है। इसके बाद की जरूरत होती है कि उसकी सुरक्षित शक्ति कितने समय तक काम देती है। ऐसे अवसर भी आपके समक्ष जरूर आएंगे जब आपकी सफलता इस पर आश्रित होगी कि उस अवसर पर आप कितना संघर्ष कर सकते हैं, आप में कष्ट सहने की क्षमता कितनी है तथा आप संकट से निपटने की कितनी ताकत अपने अंदर रखते है?

मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार के अनुभव आते रहते है। छोटी अवस्था के दौरान उन्हें अपनी शक्ति की परीक्षा की आवश्यकता न थी, अतः वे अपनी शक्तियों का इस्तेमाल अनाप–शनाप करते रहे। युवावस्था में जब वे कर्मक्षेत्र में उतरे, उन पर जिम्मेदारी पड़ी, उनकी परीक्षा का असली समय आया, जब मंजिल पर एक और मंजिल डालने की आवश्यकता हुई, तो पता चला उनकी तो नींव ही कमजोर है। यदि शिक्षा, प्रशिक्षण एवं चरित्र की नींव सुदृढ़ है, तो व्यक्ति–रूपी भवन पर एक–के–बाद एक मंजिल बनाई जा सकती है और इसी प्रकार व्यक्ति का व्यक्तित्व ऊँचा उठता चला जाता है। लेकिन यदि नींव कच्ची हो तो कार्यक्षेत्र में उतरने के उपरान्त और मंजिल निर्माण नहीं की जा सकती। संकटकाल ही हमारी तैयारी की असली परीक्षा होती है। इसी दौरान आप जान पाते हैं कि आप किसी कार्य के योग्य हैं या नहीं।

प्रत्येक मनुष्य अवांछित समस्याओं को सुलझाने, अनापेक्षित प्रश्नों के उत्तर देने, संकट का मुकाबला करने के लिए समर्थ होना चाहिए। वास्तव में संकट, अप्रत्याशित घटना, अचानक आई विपत्ति ही परीक्षा की वह आग है, जिसमें व्यक्ति की योग्यता एवं सामर्थ्य की परीक्षा होती है। संकटों से लड़ने की या मुकाबला करने की सामर्थ्य सिर्फ पुस्तकों के अध्ययन से प्राप्त नहीं होती। जो मनुष्य बिगुल की आवाज सुनते ही न केवल तैयार मिलता है, अपितु वर्षों से संचित अपने शानदार प्रशिक्षण से, सतर्कता एवं सावधानी से तैयार मिलता है, संकट का मुकाबला करने के लिए सामर्थ्यवान के रूप में सम्मुख आता है, वह जीवन संग्राम में विजयश्री अवश्य प्राप्त करता है। यदि हम चाहते है कि अपने जीवन में आधिकाधिक प्रगति करें, आगे–ही–आगे बढ़ते रहें तो हमें अपने भीतर सुरक्षित शक्ति यानी रिजर्व पॉवर को एकत्र करना चाहिए, ताकि उसके बल पर हम जीवन में आने वाली मुसीबतों को डटकर सामना कर सकें, और अपने जीवन के पथ पर निरन्तर आगे–ही–आगे बढ़ते रहें।

नि:शुल्क उपहार केन्द्र का शुभारंभ

-दिव्यांग, निर्धन व जरूरतमंदों को मिलेगी नि:शुल्क सामग्री

नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में एक और निःशुल्क सेवा प्रकल्प आरंभ किया गया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि संस्थापक कैलाश मानव के निर्देश पर दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजन एवं विमंदितो की सेवा के लिए स्थापित इस नारायण उपहार केन्द्र से उन्हें निःशुल्क परिधान, किताबें, जूते एवं चप्पल आदि प्रदान किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि जरूरतमंद लोग यहाँ अपनी पंसद के कपड़े व अन्य वस्तुएं निःशुल्क प्राप्त कर सकेंगे। कपड़ो की फिटिंग के लिए सुबह 9 से शाम 6 बजे तक टेलर भी केन्द्र में मौजूद रहेगा।

सेक्टर–3 की भैरवधाम कॉलोनी में स्थापित केन्द्र का उद्घाटन महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश मानव, जिला प्रमुख श्री शांतिलाल मेघवाल व महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रोधोगिकि विश्वविद्यालय के कुलपति डां उमाशंकर शर्मा ने किया ने किया। विशिष्ठ अतिथि डॉ. शोभालाल औदिच्य, पार्षद आशा बोर्दिया, लवदेव बागडी, जगदीश मेनारिया, प्रवीण मारवाडी, सीमा साहू तथा समाजसेवी के. एल नागौरी थे।

महापौर श्री चन्द्रसिंह कोठारी ने कहा कि यदि व्यक्ति भगवान श्री कृष्ण द्वारा गीता में दिए उपदेश के अनुसार फल की इच्छा किए बिना कर्म करता रहे तो वह निश्चय ही फल देता है, लेकिन यह फल कर्म पर आधारित है। जो गरीब की सेवा करता है प्रभु उसकी सहायता अवश्य करते हैं। कुलपति डॉ. शर्मा ने कहा कि दया ही धर्म है और परपीड़ा पाप। मनुष्य को प्रकृति से सीखने की जरूरत है कि दूसरों की सहायता में अपने को समर्पित करें। व्यक्ति यदि सौ हाथ से कमाता है तो हजारों हाथों से उसे दान भी करना चाहिए। इसी में आत्मोन्नति निहित है। उन्होंने इस बात पर दुख व्यक्त किया कि देश में कुछ लोग अशान्ति और आतंक का वातावरण बना रहें हैं, उन्हें यह नहीं मालूम की वे कितना– कुछ खो रहें हैं। जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल ने कहा कि हमारा जन्म इंसान के रूप में होता है तो इंसानियत भी ताउम्र रहनी चाहिए। सच्चे हृदय से वंचितों की सेवा से ही देश आगे बढ़ेगा। सहसंस्थापिका कमला देवी अग्रवाल, डॉ. शोभालाल औदिच्य व आशा बोर्दिया ने भी विचार व्यक्त किए। आरंभ में संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत किया। संस्थापक कैलाश मानव ने संस्थान की 31 वर्ष की सेवा यात्रा पर प्रकाश ड़ाला। संचालन ओमपाल सिलन ने किया।

मुस्कान मानवता की

¼ekuo /ke½ Üki[kyk dk "k"Ve ¼6½ i"i½

❖ कर्म प्रधान जीवन ही सार्थक❖

चलो 270 रुपये तो हुए। कितने हुए 270 तो हुए अब 100 रूपये की दक्षिणा के लिए भण्डारे में जाना हैं बेकार की बातें है। भगवान राजी नहीं होगा।

कराईये आपकी इच्छा है। अपनी – अपनी श्रद्धा है। मैं भण्डारे के पक्ष में हूँ कहीं न कहीं तो आप जीमा ही रहे हो न, कही न कही तो पेट में ही भोजन जा रहा है। करते रहिए, पर उन्हीं में कुछ गरीबों को बुला लीजिये। कुछ भण्डारे की मिठाई बचा के भेजिए वनवासी के क्षेत्र में उनको सूखी रोटी भी नसीब नहीं है। उनके मिट्टी की कोठी में अनाज नहीं है। दाल जैसी कोई चीज नहीं है। उनकी पत्नी कल दिन भर लकड़ी काटने गई थी जंगल में। बार – बार उसको डर लगता था की जंगलात विभाग के आदमी आ के मेरे को थप्पड़ न लगा दे। मेरे को गाली – गलौज न कर दे। मेरे को भगा नहीं देवे। छोटी – छोटी झाड़ियाँ लकडियाँ काट के उनके काँटों को खिरपी से खत्म करके और 50 किलो की भारी बनाके अपने माथे पर रख के बिना चप्पल पहने वो गोगुंदा से उदयपुर आ रही है। हमने बहुत देखा है। और मैंने कहा गाड़ी रोको गाड़ी। इनके पैरों में कोई चप्पल नहीं है। अपने पास चप्पल है। इनको दे देते है। मेरे पड़ौसी ने कहा था कि बाबुजी इनकी तो आदत पड़ी हुई है। इनकी आदत नहीं पड़ी इनकी मजबूरी है। धूप इनको भी लगती है। कौनसा शरीर ऐसा जो काँटों से दुखी नहीं होता? कौनसा शरीर ऐसा जिसकी स्कीन में कांटा चुभ जायें वो चिल्लाये नहीं? इनके शरीर लोहे के नहीं है। इनका शरीर भी आप और हमारे जैसा ही है।

कहोगे बाबुजी कहाँ पहुँच जाते हो। अभी तो आप कह रहे थे कात्यकला के लिए दवाइयाँ लानी है। लानी है डॉ. सा की लिस्ट लेके गया। अभी तो जनरल हॉस्पिटल के सामने की सड़क बहुत अच्छी चौड़ी हो गई है। उस समय बिल्कुल संकडी थी। दवाई मिली नहीं और दवाई मिल गई पर वो बेन्जाईम नहीं मिला। कहते भाई सा. नहीं हैं मैंने कहा क्या बात है रखते नहीं हो क्या? बोले खत्म हो गई है। स्टॉक कम है कम आती है। दूसरी जगह गया तीसरी जगह गया मन में डर भी था ऑफिस जाने में लेट नहीं हो जाऊँ। क्योंकि मैं ऑफिस को अपना भगवान समझता हूँ। जिससे दाल – रोटी मिलती है। मैं आभारी हूँ पोस्टल विभाग का बहुत आभारी हूँ।

मैं जब 6 मार्च 1971 का वो दिन याद करता हूँ। बरबस मेरा सिर झुक जाता है। इन्द्रमल चौधरी सा. के प्रति और मैं कुलदीप जी को भी कह रहा हूँ कि जो शुभ नाम इस आत्मकथा में आ रहे हैं उनकी एक सूची बनाके मालूम कराया जाये सा. कहाँ बिराज रहे है? इन्द्रमल जी चौधरी सा. उस समय जब मैंने सर्विस चालु की मेरी उम्र 23 साल की थी उनकी उम्र लगभग 45 साल की थी। मेरे से 22 साल बड़े अभी उनकी उम्र 90 साल की होनी चाहिए। हम उनका अभिनंदन करेंगे। पोस्ट ऑफिस का मैं बहुत ऋणी हूँ। कड़ा परिश्रम पसीने की कमाई जो महिनें भर में 233 रुपये मिलता रहा। 6 मार्च 1971 के बाद अप्रैल 1972 को 8 रुपये का एग्रीमेंट हुआ 233 से 241 रुपये हो गया। बहुत अच्छा लगा। 208 रुपये उस समय कुल वेतन था। 25 रुपये महंगाई भत्ता मिलता था। 233 हो गये। फिर मेरा कुल वेतन 216 रुपये हो गया। और 33 रुपये महिने का भत्ता मिल गया कुल 241 हो गया बहुत अच्छा लगता था 5–7 रुपये, 10 रुपये तो बच ही जाते थे। वो 5–5 रुपये मिलकर के कभी 100 रुपये कभी 200 रुपये और ये जो मैं आपको 1985 की बात बता रहा हूँ। तब तो 1000 रुपये 1200 रुपये मिलने लग गया था।

1989 में जूनियर अकांउट ऑफिसर बन गया था। बहुत भगवान ने दिया है। खूब दिया है। तो दवाइयों के लिए फिर घण्टा–दो घण्टे घूमे। ऑफिस फोन कर दिया था कि साहब आज में दो घण्टा लेट आऊँगा। बोले कोई बात नहीं कैलाश जी मुझे मालुम हैं। आप अच्छा काम करते थे। मुझे मालूम है। आप सतु बनाते हैं। दवाइयाँ बाँटते हो। कात्याफला मैं भी चलूँगा अगली बार हो सकेगा तो मैं भी चलूँगा, मैं बड़ा प्रसन्न हुआ।

कड़ वे प्रवचन: मुनि तरूण सागर जी

दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थ है माँ की गोद

मैं तो सिर्फ यही चाहता हूं कि मेरे इन प्रवचनों के प्रभाव से सास और बहू एक साथ रहने को राजी हो जाएं। बाप और बेटा एक साथ चलने को राजी हो जाएं। भाई और बहन एक साथ बैठकर भोजन करने को राजी हो जाएं। देवरानी और जेठानी एक साथ मंदिर जाने को राजी हो जाएं। बस! मैं मुनि तरुणसागर अपने श्रोताओं से सिर्फ इतना ही चाहता हूँ। क्या तुम मेरी इस चाहत को पूरी नहीं करोगे?

दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थ है माँ की गोद। क्योंकि इस गोद में खुद तीर्थंकर और अवतार खेले हैं। प्यार कब रोता है? जिस दिन घर के आंगन में एक नई दीवार खड़ी हो जाती है, उस दिन दो भाइयों का प्यार छुप–छुपकर रोता है। घोड़ी पर चढ़ा हुआ दुल्हा बारात में क्या विचार करे? यही कि जो आज बरात लेकर आ रहे हैं, कल मेरी अर्थी भी यही लोग उठाएंगे। यदि कोई विश्वास को तोड़ दे तो उसे माफ कर दीजिए लेकिन उसका नाम याद रखिए। अगर आप सास हैं और अपने परिवार में सुख–शांति चाहती हैं तो मेरी चार बातें ध्यान में रखिए।

पहली बात, बहू और बेटी में फर्क मत डालिए। बहू को ही बेटी मानिए।

दूसरी बात, कभी बहू से झगड़ा हो जाए तो बहू के पीहर वालों को भला–बुरा मत कहिए। इसे बहू बर्दाश्त नहीं करेगी।

तीसरी बात, मंदिर में बैठकर बहू की बुराई मत करिए। इससे सुलह के सारे दरवाजे बंद हो जाऐंगे। चौथी बात, हमेशा ध्यान रखिए कि एक बहू की चाहत क्या होती है, क्योंकि सास कभी बहू थी। सुखी–जीवन का राज है कि जो तुम्हारे पास है, उसका आनंद लो, जो नहीं है, उसके पीछे पागल मत बनो। बतौर उदाहरण– तुम्हारी जेब में 90 रुपए हैं तो उसका आनंद लो। 100 रुपए में जो 10 कम है, इसका दुःख मत करो।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक-न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक-कमलादेवी, मुद्रण स्थल-13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर-3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल- ई-डी-71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक-लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. - 0294–6622222 मो.-09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com